14. कॉलरिज के काव्य सिद्धांत

सेमुअल टेलर कॉलरिज (1772-1834) वड्र्सवर्थ के साथ स्वच्छंदतावाद के प्रवर्तकों में से हैं। उनको भी उतना ही आदर प्राप्त है जितना वड्र्सवर्थ को। कॉलरिज मूलतः कवि थे, किंतु बाद में चलकर उन्होंने दर्शन, मनोविज्ञान और साहित्य-समीक्षा के क्षेत्र में अविस्मरणीय कार्य किया। साहित्य समीक्षा को दर्शन और मनोविज्ञान से जोड़कर कॉलरिज ने नई समीक्षा प्रणाली विकसित की। उनकी सर्वाधिक चर्चित कृति है–"बायोग्राफिया लिटरेरिया" जो 1817 में प्रकाशित हुई। उनकी प्रमुख देन है सृजन-प्रक्रिया तथा कवि-प्रतिभा की गहन व्याख्या और कल्पना को स्वच्छंदतावादी साहित्य के केंद्र में प्रतिष्ठापित करना। उनका कल्पना-सिद्धांत पश्चिमी काव्यशास्त्र में आज भी मील का पत्थर है।

विलियम वड्र्सवर्थ कॉलरिज के मित्र थे। दोनों ने मिलकर एक युगांतकारी पुस्तक प्रकाशित की, जिसका नाम था–"लिरिकल बैलेड्स"। इस कृति में उन्नीस कविताएँ वड्र्सवर्थ की थीं, और चार कविताएँ कॉलरिज की। कुल 23 कविताओं का यह संग्रह अपने समय में एक नई प्रवृति का द्योतक बनकर सामने आया। इसमें सर्वथा नया भावबोध था। इस संग्रह के चार संस्करण प्रकाशित हुए और तीनों संस्करणों ने, विशेष रूप से उनमें लिखित भूमिकाओं ने समीक्षा के क्षेत्र में नई ज़मीन तलाश की। सन् 1798 में प्रकाशित इसके प्रथम संस्करण की भूमिका 'एडवर्टिजमेंट' में यह उल्लेख किया गया था कि ये कविताएँ प्रयोग के रूप में हैं, प्रयोग यह कि इनका उद्देश्य यह जानना है कि समाज के 'मध्य तथा निम्न वर्ग में प्रचलित बोलचाल की भाषा' में कविता रची जा सकती है या नहीं। इस पर पाठकों और आलोचकों की मिलीजुली प्रतिक्रिया मिली। इसका दूसरा संस्करण 1800 में प्रकाशित हुआ, जिसमें वड्र्सवर्थ ने अपनी 48 कविताएँ और जोड़ दी। इसकी भूमिका भी विस्तृत कर दी गई, जिसमें आलोचकों के आक्षेपों का तर्कपूर्ण जवाब दिया गया था। यह भूमिका 'प्रिफेस टु लिरिकल बैलेड्स' नाम से प्रसिद्ध है। इस भूमिका में ही नव आभिजात्यवादी काव्य-भाषा की प्रखर आलोचना है तथा नई काव्य भाषा का पक्ष प्रस्तुत किया गया है, जो जनसामान्य की भाषा से निर्मित है। जब 1802 में इस संग्रह का तीसरा संस्करण आया तो इसमें एक परिशिष्ट के अतिरिक्त कवि के स्वरूप एवं

कविता तथा विकास के सम्बन्ध के विषय में लगभग 10 पैराग्राफ जोड़ दिए गए। इस संस्करण में काव्य में 'कल्पनाशीलता' पर विशेष बल दिया गया है। चौथे संस्करण के नए आमुख को 'एस्से सप्लीमेंट्री' नाम दिया गया।

वस्तुतः इस समूचे आयोजन के सूत्रधार भले ही वड्र्सवर्थ थे, किंतु कॉलरिज की कविताओं और विशेषरूप से संग्रह के तीसरे संस्करण की भूमिका-लेखन में कॉलरिज का बड़ा योगदान है। काव्य में कल्पना तत्त्व और कवि के स्वरूप पर जो विचार व्यक्त किए गए हैं, वे कॉलरिज के ही हैं। यह भी संयोग ही है कि एक साथ चलने वाले इन दो कवि-समीक्षकों की विचारधारा में अंतर भी है। कॉलरिज ने वड्र्सवर्थ की काव्य भाषा विषयक मान्यताओं की यथावश्यक आलोचना भी की है। उदाहरण के लिए जहाँ वड्र्सवर्थ ग्राम्य जीवन और अशिक्षित गंवारों की भाषा को कविता में इसलिए महत्त्व देने के पक्षधर हैं कि वह खरा, सरल और साफ होता है, वहीं कॉलरिज कहते हैं कि कविता का आधार है शिक्षा, उसकी कमी नहीं। वे तर्कपूर्वक समझाते हैं कि, "गाँव के श्रमनिष्ठ जीवन में उसका मस्तिष्क अपेक्षित प्रेरणा के अभाव में सिकुड़कर कठोर हो जाता है और वह व्यक्ति स्वार्थी, इंद्रियलोलुप, गँवार और क्रूर हृदय हो जाता है। अशिक्षित व्यक्ति जो कुछ व्यक्त करता है उसके निर्णायक घटक असम्बद्ध और खण्डित होते हैं। उसमें परिप्रेक्ष्य की कमी होती है।"